

News & Views

Compiled by S.N. Nandy, D.S. Negi and S.K. Sinha

G.B. Pant Institute of Himalayan Environment and Development, Kosi-Katarmal, Almora 263 643, India.

Ban all construction in and around Badrinath: Experts

On earthquake and landslide workshop held at Gopeshwar, experts said that any building activity around Badrinath caused a great danger of erosion and landslides in the extremely fragile environment. Earth scientists, engineering experts and environmentalists had a dialogue and exchange of views on building safe houses and taking other measures of survival in that seismic zone, where tectonic activity was taking place continuously. A suggestion was made for setting up a Himalayan Disaster Mitigation Centre, which would have all the data of seismic activity.

THE HINDUSTAN TIMES: June 7, 1999

Disaster up north: melting glaciers may unleash floods

Melting Himalayan glaciers may unleash a torrent of floods in mountain valleys of north India within next 40 years and after flood these rivers would dry up due to lack of glaciers. The study reveal by environmentalist Syed Iqbal Hasnain that the rate of ice accumulation is lower than that of melting due to global warming, thereby triggering death of Himalayan glaciers. Himalayan glaciers in Uttar Pradesh, Himachal Pradesh and Sikkim have reduced considerably, and by the year 2035 most of them will vanish at their present rate of decline. Recession of glaciers may decrease water resources and increase glacier related hazards like floods caused by sudden outburst of glacier lakes cause a serious threat in India, Nepal, Bhutan, Pakistan and China.

THE ECONOMIC TIMES: June 10, 1999

Environmentalists up in arms against Himachal Govt's move

The de-notification of a part of the Great Himalayan National Park (GHNP) in Kullu district by the Himachal Pradesh Government for setting up of a hydro-electric project, is being opposed by environmentalists. About 10 km² of the GHNP itself and a lot of its buffer zone would be affected by proposed 2051MW Parbati Hydel Project at the district. The environmentalists opposing the exclusion of this area from 'great ecological, faunal, floral, geomorphologic and geological importance of GHNP' and demanding restoration of the status of the Park.

THE HINDUSTAN TIMES: June 15, 1999

Himalayan glaciers recede

Incidents of landslides, changes in river regimes and floods will increase as Himalayan glaciers including the Gangotri glacier recede at a phenomenal rate, according to experts of Geological Survey of India. Most geologists agree that global warming combined with large scale deforestation and increased human activity near the glacier have led to the increased rate of recession. In spite of the fact that Himalayan waters are the lifeblood of millions of Indians, the Government is ignoring, even various initiatives being taken out by our neighboring countries to monitor glaciers.

THE STATESMAN: July 1, 1999

Loktak lake dying a slow death

Loktak, the biggest natural lake in north-east India is dying, as out of its 289 km² area, at least 206 km² is covered by bio-mass, according to scientists. About 30 small rivers in Manipur along with 2,000 fisherfolk, who have made home on the lake, are dumping all kinds of debris into the lake. Before the construction of Ithal Barrage for power generation, most of the rivers did not empty themselves into the lake and flowed towards Myanmar, but the Loktak Hydroelectric Project had aggravated the problem.

THE HINDU: July 20, 1999

Extinction of snow leopards threatens mountain bio-diversity

Though the demand for fur made by snow leopard pelts may have gone down, but the demand for bones and body parts as marketable items for use in traditional Chinese medicine has gone up, according to the Conservation Director of the International Snow Leopard Trust. The estimated figure of this endangered species is about 4500-7500 are distributed through the mountain ranges of China, Bhutan, India, Nepal, Pakistan, and other south Asian states. Erosion of traditional knowledge, reduced herder vigilance, increased livestock numbers, and other animal husbandry changes are emerging as a

grave threat to the endangered cat. Conservationists see an urgent need to continue long term research, which should focus on management issues like livestock depredation and rangeland competition between domestic stock and wild ungulates.

Ramyata Limbu for THE FINANCIAL EXPRESS: August 1, 1999

संकट में है हिमालय के कस्तूरी मृग का अस्तित्व

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हिमालय की सुगंधित कस्तूरी की बढ़ती मांग ने कस्तूरी मृग की प्रजाति के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। यह १४,००० से १८,००० फीट की चाई पर हिमालय के बुग्यालों व बर्फीले क्षेत्रों में पाया जाता है। कस्तूरी की तीव्र सुगन्ध ही प्रजनन काल में मादा मृग को आकर्षित करती है। कस्तूरी मृग एकाकी होते हैं। अमीरो के शौक के कारण इनके अवैध आखेट व अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ती मांग ने इस प्रजाति के अस्तित्व को संकट की स्थिति में डाल दिया है। हिमालय क्षेत्र की कस्तूरी अत्यन्त सुगंधित होती हैं, वर्तमान में कस्तूरी मृग जो कि पूर्व में सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में पाया जाता था, अब केवल चमोली, उत्तरकाशी व पिथौरागढ़ में ही सीमित संख्या में रह गए हैं। इंटर नेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन के कड़े निर्देशों में कस्तूरी मृग को संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में घोषित किया गया है। वर्षों से कस्तूरी की तस्करी का स्वर्ग बने चमोली एवं पिथौरागढ़ से कस्तूरी विदेशों को आपूर्ति होती रही है। पिथौरागढ़ जो नेपाल से लगा क्षेत्र है, इस रास्ते नेपाल व वहां से हांगकांग, जापान व फ्रांस के लिए हिमालय की कस्तूरी की तस्करी बेरोकटोक जारी है। एक नर कस्तूरी मृग से ३० से ५० ग्राम तक ही कस्तूरी मिलती है। २५ से ३० नर मृग मारने पर ही १ किलो कस्तूरी मिल पाती है। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैंड में कार्यरत डा० ग्रीन जिन्होंने १९७६ से १९७८ तक कस्तूरी मृगों पर हिमालय क्षेत्र में शोध कार्य किया था। उन्होंने उस समय बताया था कि एक दशक में लगभग ५,३५० से १६,००० कस्तूरी मृग हिमालय क्षेत्र में मारे जाते हैं।

अमर उजाला: अगस्त 24, 1999

चीड़ के वृक्ष पर्यावरण के लिए घातक

कुमाउं विश्वविद्यालय के डीएसबी परिसर नैनीताल के वनस्पति विभाग के प्रो० आर० डी० खुल्बे ने स्वस्थ पर्यावरण के लिए चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आम लोगों से जागरूक होने की अपील करते हुए कहा कि चीड़ के वृक्ष पर्यावरण के लिए घातक होने के साथ साथ इनकी अधिकता से जंगल में पानी की कमी के साथ-साथ अम्लता का प्रभाव भी तेजी से फैल रहा है जिस कारण पहाड़ में अनेक जड़ी बूटियों के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने अंधाधुंध निर्माण कार्य के साथ-साथ चीड़, यूकेलिप्टस आदि के प्रोत्साहन पर गहरी चिन्ता व्यक्त की।

दैनिक जागरण: अगस्त २५, १९९९

नैनी झील को बचाने के लिए जाल निकासी की नयी व्यवस्था करनी होगी

योजना आयोग का मानना है कि यदि उत्तर प्रदेश के कुमाउं क्षेत्र में नैनीताल और भीमताल की झीलों के आकर्षण को बचाये रखना है तो इस क्षेत्र में पानी की निकासी की व्यवस्था को चाक चौबंद रखना होगा ताकि भूस्खलन को रोका जा सके। नैनीताल व भीमताल की प्रसिद्धि झीलों की तलहटी में गाद जमने की वजह से कम होती जा रही गहराई और समय समय पर वहां होने वाले भूस्खलन पर योजना आयोग के एक अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आये हैं। आयोग का मानना है कि गाद जमने का क्रम इसी तरह जारी रहा तो जल्दी ही इन झीलों का आकर्षण समाप्त हो जाएगा। आयोग ने नार्वे के विशेषज्ञों के जरिए इसका अध्ययन कराया है। योजना आयोग के उपाध्यक्ष के०सी० पन्त के निर्देश के बाद आयोग के एक प्रतिनिधिमंडल ने जून १९९९ में नैनीताल जिले का दौरा कर नैनीताल व भीमताल की झीलों की कम होती गहराई की जांच की व इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है कि इन दोनों झीलों की गहराई आश्चर्यजनक ढंग से कम होती जा रही है। १९५० में नैनीताल झील की गहराई २४ मीटर थी। लेकिन वर्तमान में यह कम होकर १७ मीटर तक आ चुकी है। आयोग का मानना है कि यदि स्थिति यही रही तो अगले दस-पंद्रह साल में गहराई १० मीटर तक आ जाएगी।

दैनिक जागरण: अगस्त २५, १९९९

Shell-shocked animals disappear from J-K

The rare species of Kargil in Jammu & Kashmir disappeared from their native areas after the outbreak of recent Indo-Pak conflict. The victims are snow leopards, wolves, brown bear and ibex, mostly found in Drass, Batalik, Kargil and Karakurum in Turtuk - all affected by the recent two-month-long conflict between India and Pakistan. Though the wildlife warden in Ladakh confirmed that the two-month-long shelling in Kargil did affect the wildlife, with rare species having migrated to safer places, but denied any casualties among these. With Pakistani shells still occasionally hitting the area, these wild animals are not returning to their native places.

THE INDIAN EXPRESS: September 21, 1999

बड़े बांधों से न पहाड़ों का हित, न मैदानों का : बहुगुणा

प्रख्यात पर्यावरणविद सुंदर लाल बहुगुणा ने पहाड़ों की खुशहाली और मैदानों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने वाली एक व्यापक हिमालय नीति बनाए जाने की मांग की है। श्री बहुगुणा ने बड़े बांध बनाए जाने का विरोध करते हुए कहा कि इससे न तो पहाड़ों का हित होगा और न मैदानों का। बड़े बांधों की कभी न कभी टूटने की आशंका बनी रहती है और ऐसी स्थिति में मैदानी भागों में प्रलय मच जाएगी। उन्होंने सुझाव दिया कि टिहरी परियोजना में बांध बनाने की बजाय सुरंगों से गुजरने वाली पानी के प्रवाह से ही बिजली पैदा करने के प्रयास किए जाने चाहिए। पहाड़ों पर सघन व्रक्षारोपण के जरिए जल संसाधनों की बर्बादी रोकी जानी चाहिए। उन्होंने सफेदा तथा चीड़ को पर्यावरण के लिए खतरनाक बताया। श्री बहुगुणा पहाड़ों के लिए पांच प्रकार की व्रक्ष प्रजातियों की सिफारिश करते हैं। भोज्य पदार्थ एवं फल देने वाले व्रक्ष, ईंधन तथा इमारती लकड़ी वाले व्रक्ष, उर्वरक देने वाले व्रक्ष, पशुचारा देने वाले व्रक्ष और रेशेदार व्रक्ष। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाते हुए हिमालय में केवल इमारती लकड़ी के पेड़ों को बढ़ावा दिया। उन्होंने कहा कि उचित वन संरचना से पर्वतीय क्षेत्र की नदियों के प्रवाह को नियमित करके न केवल पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है, बल्कि बाढ़ के खतरे से भी बचा जा सकता है। बढ़ते प्रदूषण के इस युग में जीवन वायु आक्सीजन तथा पेयजल की शुद्धता तथा प्रचुरता वनों से ही संभव है।

नवभारत टाइम्स: सितम्बर १८, १९९९

Gangotri may vanish in ten years: experts

The Gangotri Conservation Project (GCP), jointly administered by Government of India, State Government of Uttar Pradesh, Himalayan Environment Trust, environment experts and local representatives have recommended a monitoring station at Gangotri in view of disturbing reports about the Bhagirathi river shrinking drastically. The main objectives set out for GCP are to green and clean the Gangotri basin, develop low cost sanitation schemes and schemes for solid waste disposal, develop alternative energy programmes for conservation of environment with maximum involvement of local populace.

THE HINDUSTAN TIMES: September 27, 1999

Mining aggravates floods

The rainy season, this year has left an unbearable tale of disaster, thousands of people homeless, hundreds of acres of fertile land has been ravaged by the floods in Himachal Pradesh. The state government has suffered an estimated loss of Rs. 500 crore. In Kangra district alone over 100 link roads were damaged and yet to be restored. The reckless, unscientific mining and quarrying in the state have been attributed to be a major cause for the repeated flashfloods in this region. It is revealed that illegal mining and quarrying has taken a new turn in the past few years and political interference in the functioning of Forest and Mining Departments had worsened the matters. Experts feel that if no effective measures are adopted and sincere efforts made, the fury of floods will continue to hit the ecology of the state year after year.

THE TRIBUNE: October 2, 1999

NSCN, DHD ultras denuding NC Hills, Karbi Anglong forests

The rich forest cover of the two hill districts of North Cachar Hills and Karbi Anglong is under threat of denudation as the banned NSCN and local militant outfits are indulging in the illegal felling of trees by issuing permits to some timber contractors. In spite of being fully aware of the militants activities,

the police officials are helpless to take proper action against the culprits, because of the difficult terrain in the border areas due to extremely harsh conditions and the shortage of adequate staff.

THE SENTINEL: October 6, 1999

Anti-quake building in N-E planned

The Indian Concrete Institute in Manipur is designing earthquake resistant buildings in the North-East to reduce the damage induced by the frequent tremors as the region is considered one of the most earthquake-prone zones in the world. Engineers and architects in the state have made a breakthrough in developing quake-resistant buildings. Prof. S.K. Jain of IIT has recommended the replacement of the traditional timber, with alternate material without changing the quake-resistant features of the 'Assam-type' houses.

THE TELEGRAPH: October 19, 1999

Bid to preserve Wullar lake

To preserve the world famous Wullar lake in North Kashmir, the largest freshwater lake in Asia, the Union Ministry of Environment and Forests has banned all types of industrial activity within seven km of the lake. In a notification issued recently, the ministry has impressed upon the State Pollution Control Board that no industrial activity should be allowed within the prescribed limit. Besides the lake has been declared a wetland, also been identified by the Environment Department for special attention in environmental point of view.

THE STATESMAN: October 21, 1999

Rehabilitation issue likely to delay Tehri project

Evacuation of the old town and villages in the Tehri valley, as scheduled, remains an impossible task even as the game of passing the buck continues unabated. The task of rehabilitation of more than 30,000 oustees was handed over to the state government authorities after persistent complaints about insensitivity, irregularities and corruption by the officials of the Tehri Hydro Development Corporation. According to the survey, not less than 9,546 families are yet to be rehabilitated. The next stage of construction of the dam project which involves filling up a substantial portion of the proposed reservoir. Besides over a 15,000 population of the Old Tehri, as many as 125 villages would be affected by the reservoir. Of these 37 villages are likely to be submerged completely, while remaining 88 would be partially submerged.